SHRI RAM SEWAK : I have explained the position and I request you to give a ruling.

MR. SPEAKER : So far as the President's sanction is concerned it is already there it does not involve any expenditure and there is no need of any financial memorandum. So, the question is :

> "That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Khadi and other Handloom Industries Development (Additional Excise Duty on Cloth) Act, 1953."

The motion was adopted.

MR. SPEAKER : They should always be mindful about Mr. Srinibas Misra and Shri S. C. Jha and must always come prepared on two points—sanction of the President and financial memorandum, because normally their objections are around these points. They are the permanent watchdogs of this House......(*Interruptions.*) It is a compliment ; they are alert about the formalities. The Ministers must come prepared on these two points.

SHRI RAM SEWAK : I introduce* the Bill.

12.50 hrs.

MOTIONS *RE* : REPORTS OF COMMISSIONER FOR SCHEDULED CASTES AND SCHEDULED TRIBES ; AND COMMITTEE ON UNTOUCHABILITY—*contd.*

MR. SPEAKER : Shri Abdul Ghani Dar was on his legs.

श्री अब्दुल गनी डार (गुड़गाँव) : स्पीकर साहब, मैं अर्ज कर रहा था कि हालांकि यह सरकार हमेशा कहती है कि हरिजन भाइयों के हुकूक की पूरी पूरी हिफाजत की जायेगी। लेकिन जब मेरी निगाह पड़ती है प्राइम मिनिस्टर के सैक्रेटेरियट पर, दूसरे मिनिस्टरों के दफ्तरों पर, एम्बैसेडर्ज और गवर्नमेंट की दूसरी की पोस्ट्स पर, तो मुझे वहां एक परसेन्ट भी हरिजन दिखाई नहीं देते हैं।

पिछले दिनों बैंकों के नेशनलाइजेशन के बारे में प्राइम मिनिस्टर साहिबा ने कहा कि हम ने बैंकों को इसलिए अपने हाथ में लिया है कि हम गरीब और निर्बल लोगों की मदद करें, जिनको कोई अधिकार या सहूलियत नहीं मिले हुए हैं। लेकिन जहां तक मैंने स्टडी किया है, इन बैंकों से अब तक जो कर्जे दिये गए हैं, उन में से हरिजनों को दस परसेंट भी नहीं मिला है।

सरकार की तरफ से कई किस्म के लाइसेंस, परमिट और रूट परमिट वगैरह दिये जाते हैं। उसके लिए रुपया लगाने की जरूरत होती है। लेकिन हरिजनों के पास रुपया नहीं है। सब जानते हैं कि हरिजनों की इक्तसादी हालत खराब है और हजारों साल से उनके जेहन में यह बात भरी गई है कि वे दूसरों के बराबर नहीं हैं। अगर इन नेशनलाइज्ड बैंकों की तरफ से हरिजन भाइयों को नये काम शुरू करने के लिए कर्जे दिये जाते, तो हम समझ सकते कि गवर्नमेंट वाकई हरिजनों की मदद करना चाहती है। लेकिन जैसा कि मैंने अभी कहा है, ऐसा नहीं किया गया है।

दिल्ली में अभी जो इन्सानी बिरादरी नाम की जमात बनाई गई है, उसमें किसी हरिजन को नहीं बुलाया गया और न ही किसी हरिजन को उसकी एक्सीक्यूटिव में लिया गया, जैसे कि हरिजन इन्सान ही नहीं हैं। जो गांधी जी के सबसे बड़ फालोअर और सर्वोदयवाद के हामी कहलाते हैं, वह श्री जयप्रकाश नारायण इस इन्सानी बिरादरी को शुरू करने वालों में

---

*Introduced with the recommendation of the President.

से एक हैं। लेकिन उनको भी यह बात समझ में नहीं आई कि हरिजनों के बिना इन्सानी बिरादरी क्या होगी। उनके अलावा शेख मुहम्मद अब्दुल्ला और जेनेरल शाहनवाज खां इस जमात को बनाने वालों में हैं। जेनेरल शाहनवाज़ खां नेशनल सीड्ज़ कारपोरेशन के चेयरमैन हैं। वह सरकारी मुलाज़िम हैं, लेकिन वह इस जमात के जेनेरल सेक्रेटरी बन गये हैं। श्रीमती इंदिरा गांधी अपने थैले से कैसे नये नये खिलौने निकाल रही हैं।

गुरु नानक देव ने कहा है : "अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत दे सब बन्दे, इक नूर थीं सब जग उपजाया, कौन भले कौन मन्दे।" सब एक ही भगवान की सन्तान हैं। लेकिन हरिजनों के साथ इन्सानों जैसा सलूक नहीं किया जाता है।

एम्बैसेडर, चांसलर या वाइस-चांसलर बनाना तो सरकार के अख्त्यार में है। वह किसी पब्लिक सर्विस कमीशन के हाथ में नहीं है। तो फिर गवर्नमेंट किसी हरिजन को इन जगहों पर मुकर्रर क्यों नहीं करती है ? राज्य सभा में कुछ लोगों को राष्ट्रपति के नाम से नामज़द किया जाता है। नाम तो राष्ट्रपति का है, लेकिन उसका अख्त्यार प्राइम मिनिस्टर को है। राज्य सभा में हरिजनों को नामज़द क्यों नहीं किया जाता है ? इन बातों पर तो सरकार का अधिकार है। उसको इस बारे में हरिजनों का ख्याल करना चाहिए। अगर वह उनका ख्याल नहीं करती है, तो मैं समझता हूं कि "जा इन लिबासियों के न ज़ाहिर लिबास पर, आरी अबाये होशो कुवाये खिरद से हैं।" ये लोग ज़ाहिरा तौर पर कहते हैं कि हम हरिजनों की भलाई चाहते हैं, लेकिन उन्हें धोखा देते हैं। अगर ये उनकी भलाई चाहते हैं, तो ये अपने अधिकारों का इस्तेमाल कर के हरिजनों को तरक्की करने का मौका दें, ताकि उन्हें यह महसूस हो कि इस देश में कोई भेद-भाव नहीं है और वे दूसरों के बराबर हैं।

अगर हम हरिजनों को लेजिसलेचर्ज में रिजर्वेशन देते हैं, तो इसलिए कि वे कमजोर हैं। जब तक उनकी माली हालत अच्छी नहीं हो जाती है, तब तक न सिर्फ सरकारी पार्टी, बल्कि सब पार्टियां अपने तौर पर हरिजनों को जेनेरल सीट्स से कामयाब करायें। मैंने देखा है कि इलाहाबाद में, जो श्रीमती इन्दिरा गांधी का घर है, कार्पोरेशन के इलेक्शन में उनकी पार्टी को 54 में से 5 सीटें मिली हैं। लेकिन वहां दो हरिजन भाई मुस्लिम मजलिस के टिकट पर सबसे ज्यादा वोट हासिल करके जीते हैं। हरिजनों को रिजर्वेशन तो दिया ही जाये, लेकिन साथ ही सब पार्टियां उनको जेनेरल सीट्स पर खड़ा करें, ताकि उनको महसूस हो कि वे दूसरों के बराबर हैं। यहां एक भी हरिजन मेम्बर ऐसा नजर नहीं आता है, जो जेनेरल सीट से आया हो।

पंजाब से श्री जगन्नाथ एक जेनेरल सीट से जीत कर आये थे। हमारे सिख भाई बड़े फराखदिल हैं। उनके दिमाग में हरिजन और गैर-हरिजन का कोई सवाल नहीं है लेकिन उन्होंने भी राज्य सभा में जो मेम्बर भेजे, उन में कोई हरिजन नहीं है।

रिजर्व बैंक के कुछ जिम्मेदार अफसरों ने कहा है कि रशा से सौ-सौ रुपये के अरबों रुपये के जाली नोट छप कर यहां आए हैं। अगर सी० पी० आई० उन नोटों को हरिजनों में बांट देती, तो मैं समझता कि इसमें कोई हर्ज की बात नहीं है।

ज्यों ज्यों इलैक्शन नज़दीक आ रहे हैं, लोगों के वोट हासिल करने के लिए नये नये खिलौने निकाले जा रहे हैं। हरिजनों को ज़मीन का लालच दिया जा रहा है। श्रीमती इन्दिरा गांधी के फार्म पर कब्ज़ा करने की बात कही जा रही है। हरिजनों का एक एक बच्चा पुकार कर कह रहा है, "किस किस तरह सताते हैं ये बुत हमें निज़ाम, हम ऐसे हैं कि जैसे किसी

[श्री अब्दुल गनी डार]

का खुदा न हो।" श्रीमती इन्दिरा गांधी और इस गवर्नमेंट को सबक लेना चाहिए। अगर वे नहीं लेंगे, तो "करीब है यारो रोजे-मशहर, छुपेगा कुश्तों का खून क्योंकर, जो चुप रहेगी जुबाने-खंजर, लहू पुकारेगा आस्तीन का।" ये खून से लदे होंगे और दुनिया इन पर थूकेगी।

[شری عبدالغنی ڈار (گوڑگاوں) :
سپیکر صاحب - میں عرض کر رہا تھا کہ حالانکہ یہ سرکار ہمیشہ کہتی ہے کہ ہریجن بھائیوں کے حقوق کی پوری پوری حفاظت کی جائیگی - لیکن جب میری نگاہ پڑتی ہے پرائم منسٹر کے سیکریٹیریٹ پر - دوسرے منسٹروں کے دفتروں پر- ایمبیسیڈرز اور گورنمینٹ کی دوسری کی پوسٹس پر - تو مجھے وہاں ایک پرسینٹ بھی ہریجن دکھائی نہیں دیتے ہیں -

پچھلے دنوں بینکوں کے نیشنلائزیشن کے بارے میں پرائم منسٹر صاحبہ نے کہا کہ ہم نے بینکوں کو اسلئے اپنے ہاتھہ میں لیا ہے کہ ہم غریب اور نوبل لوگوں کی مدد کریں - جن کو کوئی ادھیکار یا سہولیت نہیں ملے ہوئے ہیں - لیکن جہاں تک میں نے سٹڈی کیا ہے - ان بینکوں سے اب تک جو قرضے دئے گئے ہیں - ان میں سے ہریجنوں کو دس پرسینٹ بھی نہیں ملے ہیں -

سرکار کی طرف سے کئی قسم کے لائسینس - پرمٹ اور روٹ پرمٹ وغیرہ دئے جاتے ہیں - اسکے لئے روپیہ لگانے کی ضرورت ہوتی ہے - لیکن ہریجنوں کے پاس روپیہ نہیں ہے - سب جانتے ہیں کہ ہریجنوں کی اقتصادی حالت خراب ہے اور ہزاروں سال سے انکے ذہن میں یہ بات بھری گئی ہے کہ وہ دوسروں کے برابر نہیں ہیں - اگر ان نیشنلائزڈ بینکوں کی طرف سے ہریجن بھائیوں کو نئے کام شروع کرنے کے لئے قرضے دئے جاتے - تو ہم سمجھہ سکتے کہ گورنمینٹ واقعی ہریجنوں کی مدد کرنا چاہتی ہے - لیکن جیسا کہ میں نے ابھی کہا ہے - ایسا نہیں کیا گیا ہے - دہلی میں ابھی جو انسانی برادری نام کی جماعت بنائی گئی ہے - اس میں کسی ہریجن کو نہیں بلایا گیا اور نہ ہی کسی ہریجن کو اسکی ایکسیکیوٹو میں لیا گیا- جیسے کہ ہریجن انسان ہی نہیں ہیں - جو گاندھی جی کے سب سے بڑے فالوور اور سرودیہ واد کے حامی کہلاتے ہیں - وہ سری جے پرکاش نارائن اس انسانی برادری کو شروع کرنے والوں میں سے ایک ہیں - لیکن انکو بھی یہ بات سمجھہ میں نہیں آئی کہ ہریجنوں کے بنا انسانی برادری کیا ہوگی - انکے علاوہ شیخ محمد عبد اللہ اور جنرل شاہ نواز خاں اس جماعت کو بنانے والوں میں ہیں - جنرل شاہ نواز خاں نیشنل سیڈز کارپوریشن کے چیرمین ہیں - وہ سرکاری ملازم ہیں - لیکن وہ اس جماعت کے جنرل سیکریٹری بن گئے ہیں - شریمتی اندیرا گاندھی اپنے تھیلے سے کیسے نئے نئے کھلونے نکال رہی ہیں -

گورو نانک دیو نے کہا ہے - " اول اللہ نور اپایا - قدرت دے سب بندے - اک نور تھیں سب جگ اپجایا - کون بھلے کون مندے-" سب ایک ہی بھگوان کی سنتان ہیں - لیکن ہریجنوں کے ساتھہ انسانوں جیسا سلوک نہیں کیا جاتا ہے -

ایمبیسیڈر - چانسلر یا وائس چانسلر بنانا تو سرکار کے اختیار میں ہے- وہ کسی پبلک سروس کمیشن کے ماتحت میں نہیں ہے- تو پھر گورنمینٹ کسی ہریجن کو ان جگہوں پر مقرر کیوں نہیں کرتی ہے- راجیہ سبھا میں کچھہ لوگوں کو راشٹرپتی کےنام سے نامزد کیا جاتا ہے - نام تو راشٹرپتی کا ہے- لیکن اسکا اختیار پرائم منسٹر کو ہے- راجیہ

سبھا میں ہریجنوں کو نامزد کیوں نہیں کیا جاتا ہے- ان باتوں پر تو سرکار کا ادھیکار ہے - اسکو اس بارے میں ہریجنوں کا خیال کرنا چاہئے- اگر وہ انکا خیال نہیں کرتی ہے- تو میں سمجھتا ہوں کہ "جا ان لباسوں کے نہ ظاہر لباس پر - عاری عبا ہوش و فہم خرد سے ہیں -" یہ لوگ ظاہرا طور پر کہتے ہیں کہ ہم ہریجنوں کی بھلائی چاہتے ہیں- لیکن انہیں دھوکا دیتے ہیں- اگر یہ انکی بھلائی چاہتے ہیں- تو یہ اپنے ادھیکاروں کا استعمال کر کے ہریجنوں کو ترقی کرنے کا موقعہ دیں - تاکہ انہیں یہ محسوس ہو کہ اس دیش میں کوئی بھید-بھاو نہیں ہے اور وہ دوسروں کے برابر ہیں-

اگر ہم ہریجنوں کو لیجسلیچرز میں ریزرویشن دیتے ہیں- تو اس لئے کہ وہ کمزور ہیں- جب تک انکی مالی حالت اچھی نہیں ہو جاتی ہے- تب تک نہ صرف سرکاری پارٹی- بلکہ سب پارٹیاں اپنے تور پر ہریجنوں کو جنرل سیٹس سے کامیاب کرائیں- میں نے دیکھا ہے کہ الہ آباد میں جو شریمتی اندرا گاندھی کا گھر ہے - کارپوریشن کے الیکشن میں انکی پارٹی کو ۵۴ میں سے ۵ سیٹیں ملی ہیں - لیکن وہاں دو ہریجن بھائی مسلم مجلس کے ٹکٹ پر سب سے زیادہ ووٹ حاصل کر کے جیتے ہیں- ہریجنوں کو ریزرویشن تو دیا ہی جائے- لیکن ساتھ ہی سب پارٹیاں انکو جنرل سیٹس پر کھڑا کریں- تاکہ انکو محسوس ہو کہ وہ دوسروں کے برابر ہیں - یہاں ایک بھی ہریجن ممبر ایسا نظر نہیں آتا ہے- جو جنرل سیٹ سے آیا ہو -

پنجاب سے شری جگناتھ ایک جنرل سیٹ سے جیت کر آئے تھے - ہمارے سکھ بھائی بڑے فراخدل ہیں- انکے دماغ میں ہریجن اور غیر ہریجن کا کوئی سوال نہیں ہے- لیکن انہوں نے بھی راجیہ سبھا میں جو ممبر بھیجے ان میں کوئی ہریجن نہیں ہے -

ریزرو بینک کے کچھ ذمہ وار افسروں نے کہا ہے کہ رشیا سے سو سو روپئے کے عربوں روپئے کے جعلی نوٹ چھپکر یہاں آئے ہیں- اگر سی-پی-آئی ان نوٹوں کو ہریجنوں میں بانٹ دیتی- تو میں سمجھتا کہ اس میں کوئی حرج کی بات نہیں ہے -

جوں جوں الیکشن نزدیک آرہے ہیں- لوگوں کے ووٹ حاصل کرنے کے لئے نئے نئے کھلونے نکالے جارہے ہیں- ہریجنوں کو زمین کا لالچ دیا جا رہا ہے- شریمتی اندیرا گاندھی کے فارم پر قبضہ کرنے کی بات کہی جارہی ہے- ہریجنوں کا ایک ایک بچہ پکار کر کہہ رہا ہے- "کس کس طرح ستاتے ہیں یہ بت ہمیں نظام - ہم ایسے ہیں کہ جیسے کسی کا خدا نہ ہو"- شریمتی اندیرا گاندھی اور اس گورنمینٹ کو سبق لینا چاہئے - اگر وہ نہیں لینگے- تو " قریب ہے یارو روز محشر- چھپیگا کشتوں کا خون کیونکر - جو چپ رہیگی زبان خنجر - لہو پکاریگا آستیں کا -" یہ خون سے لدے ہونگے اور دنیا ان پر تھوکیگی -]

श्री जनेश्वर मिश्र (फूलपुर) : अध्यक्ष महोदय, सब से पहले मैं दो निवेदन करना चाहता हूं। एक तो यह कि हमारे पस्वान साहब बड़े बुजुर्ग हैं; उनको दो-तीन मिनट का समय जरूर देना चाहिए। दूसरे, श्री मोलहू प्रसाद ने मुझसे बार-बार कहा है कि मैं पेरुमल कमेटी की सिफारिशों के बारे में जरूर जोर दूं। वे करीब 203 सिफारिशें हैं। मैं श्री जगन्नाथ राव से निवेदन करूंगा कि इस विषय पर बीस घंटे की बहस हो रही है; वह साफ शब्दों में इस सदन को आश्वासन दें—समयबद्ध आश्वासन

[श्री जनेश्वर मिश्र]

दें कि बीस दिनों के अन्दर नहीं, बल्कि बीस महीनों के अन्दर, या अमुक समय के अन्दर, हरिजनों की पढ़ाई, उनके राजनैतिक और सामाजिक अधिकारों और जमीन आदि के बारे में पेरुमल कमेटी की मुख्य सिफारिशों को सरकार लागू कर देगी। यह कहने का कोई मतलब नहीं है कि हम उनको लागू कर देंगे। वह कोई समय बांध कर आश्वासन दें। अगर वह ऐसा आश्वासन नहीं देते हैं, तो हम यह मान कर चलेंगे कि हम लोग इस सदन में बीस घंटे तक केवल बकवास करते रहे, और कुछ नहीं।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य अगले दिन अपने भाषण को जारी रखेंगे।

13 hrs.

The Lok Sabha adjourned for Lunch till Fourteen of the Clock.

The Lok Sabha re-assembled after Lunch at five minutes past Fourteen of the Clock.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *In the Chair*]

DISCUSSION *RE.* LAND REFORM MEASURES AND THE MOVEMENT FOR OCCUPATION OF LANDS

MR. DEPUTY-SPEAKER ; We shall now take up the discussion on land reform measures under rule 193. As hon. Members are aware, the House has agreed to allot three hours for this. The question is very important and hon. Members have a lot to say. But I would request them to be brief and to the point and try to confine themselves to the time allotted so that we can finish this discussion today and, if possible, I can ask the Minister to reply at 5 O'clock because at 5.30 p.m. we have the Half an Hour discussion.

SHRI RAMSHEKHAR PRASAD SINGH (Chapra) : This is a very important dsscussion. So, the time should be increased.

श्री शिव चन्द्र झा (मधुबनी) : उपाध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है। यह आप जानते हैं कि यह जो बहस चल रही है यह एक अहम विषय पर है। आज सारे देश में और मोटे तौर पर हर राज्य में यह आन्दोलन चल रहा है। इस आन्दोलन के मुताल्लिक प्रधान मंत्री जी ने यह भी कहा है कि यह अनकांस्टीट्यूशनल है, अन-गांधियन है। यानी उनकी प्रतिक्रिया बड़ी जबर्दस्त है। यह इतना अहम है कि इस विभाग के मंत्री ही नहीं बल्कि प्रधान मंत्री यहां बैठें और इस बहस का जवाब दें। लेकिन यह उसका महत्व नहीं समझते हैं। सदन चाहेगा कि प्रधान मंत्री यहाँ आकर बैठें।

MR. DEPUTY-SPEAKER : There is no point of order, It is a suggestion for the government to consider. It is a cellective responsibility.

SHRI H. N. MUKHERJEE (Calcutta—North-East) : Sir, on earlier occassions also the House had to bring to your notice, and you were good enough to take notice, about the absence of the Ministers on the front benches on more than one occasion. I have been here, like my friend Dr. Ram Subhag Singh, since the first Parliament and even in those days we found that the Ministers of the front bench wonld never behave in the way they are doing now with impunity from day to day, and something should be done about it.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (Balrampur) : Sir, you just now declared that this is an important discussion. But the Minister of Food and Agricutture is not present in the House. Is this the way to treat the House ? It is a contempt of the House.

SHRI SHEO NARAYAN (Basti) : Shri Shinde is a junior Minister he is not a Cabinet Minister. We want a reply from a Cabinet Minister.

MR. DEPUTY-SPEAKER : The feelings of the members bave been expressed and they are now before the Government. It is for the Government to consider it. Of course, one Cabinet Minister is present here.